

R. GORR. 1, 67, 7. भूमि: MBH. 1, 5374. विदीर्यितकला भूमि: 3, 15100. क-  
वचानि विदीर्यते शैः 6, 5223. ढक्का RĀGA-TAR. 6, 133. 4, 568. मेघस्वेव  
दीर्यतः HARIV. 3781. मन्थुना व्यदीर्यते कृदयम् MBH. 3, 2300. 2773. R. 5,  
28, 4. न विदीर्यति मे मनः MBH. 13, 7786. R. GORR. 2, 112, 15. अयोधनेनाय  
इवाभितप्तं वैदेहिबन्धोर्हृदयं विद्रे RAGH. 14, 33. विदीर्यकृदयः शुचा  
12, 77. शतधा विदीर्यं यच्चैतः PRAB. 76, 14. न विदीर्यं KUMĀRAS. 4, 5. मदा  
— क्रोडविदीर्यया zerbrückt BĒG. P. 8, 16, 26. विदीर्यं aufgerissen,  
wund: विदीर्योत्फुल्लपादका KATHĀS. 20, 109. durchbohrt: राघवास्त्रवि-  
दीर्योनां रत्नसाम् RAGH. 12, 51. PRAB. 87, 13. बधमेव प्रशंसति शत्रूणां मयका-  
रिणाम् । सुविदीर्यं सुविक्रातं सुयुद्धं सुयत्नायितम् ॥ wobei man gehörig  
den Feind durchbohrt MBH. 1, 5552. sich aufthun, sich öffnen: विदी-  
र्यमुख RAGH. 7, 37. PRAB. 85, 13. vor Angst bersten, den Kopf verlieren:  
को हि गाण्डीवधन्वानं रणे सोढुं नरो ऽर्हति । यमुपश्रुत्य सेनाप्रे जनः सर्वो  
विदीर्यते ॥ MBH. 7, 329. त्वया विक्रीने दृष्ट्वा तु विदीर्यते सा पुरी im  
Gegens. zu समाश्रयित् R. GORR. 2, 51, 4. — caus. auseinanderbersten  
machen, zersprengen, spalten, zerreißen, zerschmettern, zerfleischen, auf-  
wühlen: मकीं पद्मा विदारयन् MBH. 1, 5840. 3, 8876. R. 3, 4, 17. फलं  
मर्कटेन विदारितम् VET. 2, 10. टङ्कैर्मनःशिलागुह्येन विदार्यमाणा MĀKĀB.  
10, 14. वित्पेटो शनैः शनैर्विदार्य PĀNĀT. 126, 2. 21, 13, 14. वल्मीकशिख-  
राणि प्रङ्गभ्यां विदार्य 9, 8. प्रीतिं नखैः सर्वो व्यदारयत् R. 3, 57, 24. MBH.  
4, 399. HARIV. 6896. R. 6, 17, 30. VARĀH. BRH. S. 32, 4. PĀNĀT. I, 131. 72,  
11. 121, 2. 190, 19. 232, 16. VET. 13, 19. सौबलं निशितैः शैः व्यदारयत  
सेयामे मधवा इव दानवम् 6, 1733. अस्थि विदारितम् zersprengt SUGR. 1,  
301, 11. स घोषो धार्तराष्ट्राणां कृदयानि व्यदारयत् BHAG. 1, 19. चित्तं वि-  
दारयति कस्य न कोविदारः so v. a. aufregen R. 3, 6. aufreißen, öff-  
nen: स एतमेव सीमानं विदार्यतया द्वारा प्रापयत् AIT. UP. 3, 12. वक्रम्  
HARIV. 16019. R. 1, 14. durchbrechen, auseinanderdrängen, auseinan-  
stieben machen: व्यदारयद्दानरसागौराघं मन्त्राकषः पूर्णमिवार्णविधम् R. 6,  
36, 9. 18, 59. नरेश्वरान् । सिन्धुरानिव गन्धेभो गन्धेनैव व्यदारयत् RĀGA-  
TAR. 1, 300. fortschieben: विदार्य वामेन करेण KATHĀS. 17, 128. — intens.  
zerspalten, eröffnen: पुरो विर्ददः RV. 4, 16, 13. 7, 18, 13. दर्दरीति 6, 73,  
2. उतादर्दर्मन्थुना शम्बरं वि 2, 24, 2. 10, 67, 7. व्यदर्दित्वैलम् 138, 1.  
TS. 2, 3, 14, 6. — Vgl. अविद्रिय, विदार fgg.

2. दर (द) द्विर्यते DAṬUP. 28, 118. Findet sich zuerst in den Brāh-  
maṇa, aber nur mit der praep. आ und meist in negativen Sätzen. —  
desid. दिदरिषते P. 7, 2, 75. VOP. 19, 7.

— आ, आद्रियते P. 7, 4, 28. Sch. आद्रत pass. refl. P. 3, 1, 87, Vārtt.  
10. dem Vermaass zu Liebe hier und da act. Rücksicht nehmen, beach-  
ten: यच्च कामयेतापि नाद्रियते CAT. BR. 1, 7, 4, 22. 3, 8, 4, 16. यथा कैवा-  
स्मिं लोके न संपतमाद्रियते 2, 3, 2, 8. स यदि न विन्दति किमाद्रियेरन् (so  
v. a. नाद्रियेरन्) 4, 5, 2, 1. 10, 1. तस्मादपि नाद्रियेत बह्वीः कर्तुम् 9, 1, 2,  
16. तत्कार्यं वै नाद्रियेयमीश्वरो ऽस्मीति MBH. 13, 7441. कुलं विद्यां श्रुतं  
शौर्यं तैशील्यं भूतपूर्वताम् । वयो ऽवस्थां च संप्रेत्य आद्रियेत महात्मवान्  
KĀM. NĪTIS. 5, 67. Mit dem acc. der Sache: मा पुत्र तदाद्याः mach  
dir nichts daraus, kümmere dich nicht darum AIT. BR. 5, 14.  
BĒG. P. 9, 4, 2. किं स यत्मानस्य पापमभ्रमाद्रियेत AIT. BR. 3, 7. तत्त-  
नाद्रित्यम् 1, 4. नान्यमाद्रियते CAT. BR. 3, 3, 4, 14. मैतदादृष्टम् 8, 3, 28.  
11, 5, 2. अनाद्रित्य वसतिम् 14, 9, 2, 5. NĪR. 7, 23. न तं समयमाद्रित्य

MBH. 5, 634. वाक्यं नाद्रियते च BHARTṚ. 3, 74. अनाद्रित्य तु तदाक्यम्  
R. 1, 1, 50. 75, 70. PĀNĀT. 187, 23. ÇĀK. CH. 128, 10. BĒG. P. 1, 4,  
10. (विद्या) द्वितीयाद्रियते सदा pass. in Ansehen stehen HIT. Pr. 6. Jmd  
mit Rücksicht behandeln, auszeichnen; mit dem acc.: तामागतं तत्र न क-  
श्चनाद्रियत् BĒG. P. 4, 4, 7. 3, 30, 14. तं स्वयम् । स्वागतेनाद्रितवती KATHĀS. 26,  
48. आद्रित्य dem Achtung zu erweisen ist R. 6, 39, 9. BHATT. 6, 55. — आद्रत  
partic. 1) mit act. Bed. alle Rücksicht beobachtend, aufmerksam, Bedacht  
habend, bedacht auf, = सादर AK. 3, 4, 14, 88. H. an. 3, 243. MED. t.  
88. कृत्वाज्ञो भर्तुराद्रताः R. 5, 25, 56. RAGH. 3, 5. PĀNĀT. III, 243. BĒG.  
P. 1, 11, 4. 19. 7, 2, 13. 8, 20, 11. सर्वेष्वेव व्रतेष्वेव प्रापश्चितार्थमाद्रतः M. 11,  
225. तस्मात्तत्राद्रतो भवेत् 7, 150. तपस्याद्रतचेतसः BĒG. P. 4, 24, 19. स्व-  
स्त्यपनाद्रत KATHĀS. 12, 179. — 2) beachtet, mit Rücksicht behandelt,  
geehrt, = अर्चित AK. H. an. MED. सर्वे तस्याद्रता धर्मा यस्यैते त्रय  
(माता, पिता, गुरुः) आद्रताः M. 2, 234. आद्रतस्तया KATHĀS. 3, 56. तत्सर्व-  
मखिलेनोक्तं ममाख्येयमनाद्रतम् ohne alle Rücksicht, gerade herans R. 1, 59,  
8. तौ वारयितुं श्यना निर्देश आद्रतः mit Absicht gewählt KĀR. 8 aus SIDDH.  
K. zu P. 7, 2, 10. — Vgl. आदर, आदरण fg., आदरि, आद्रत्य,  
अनाद्रत.

— अत्या grosse Rücksicht nehmen auf, sehr bedacht sein auf: यस्तौ  
विविक्तचरितैरनुवर्तमानां नात्याद्रियत् BĒG. P. 3, 16, 21. अत्याद्रत partic.  
mit act. Bed.: कर्माण्यत्याद्रतः प्रतिदिनं सुकृती करोति DEV. 4, 15. mit  
pass. Bed.: नात्याद्रतशरीरसंस्कार DAÇAK. in BENF. CHR. 181, 19.

— प्रत्या gegen Jmd Rücksicht bezeigen: कथं नु नो हृतश्चरन् प्रत्या-  
दद्याः CAT. BR. 3, 5, 4, 16.

— समा, partic. समाद्रत alle Rücksicht beobachtend, seine ganze Ach-  
tung bezeichnend BĒG. P. 8, 21, 5.

दर (von 1. दर) parox. P. 3, 3, 58. 1) adj. am Ende eines comp. spaltend,  
sprengend, zerbrechend; s. पुरंदर. Viell. erschliessend, eröffnend in  
सद्वदर. — 2) subst. m. n. gaṇa अर्थर्चादि zu P. 2, 4, 31. a) Loch in der  
Erde, Höhle, m. n. AK. 3, 4, 25, 186. MED. r. 46. m. oxyt. gaṇa उच्छादि  
zu P. 6, 1, 160. H. 1364. an. 2, 429. R. 2, 96, 4. Gewöhnlich दरो f. AK.  
2, 3, 6. H. 1033. H. an. MED. MBH. 1, 4651. 7296. 6, 266. R. 4, 13, 6. 47, 3.  
BHARTṚ. 3, 30. 79. KUMĀRAS. 1, 10. R. 1, 25. BĒG. P. 5, 8, 3. 24, 23. 6, 9,  
15. RĀGA-TAR. 4, 169. मेघोदरदरो HARIV. 12761. उदरदरीपूरा BHARTṚ.  
3, 24. दरि (ÇABDAR. im ÇKDR.) dem Versmaass zu Liebe MBH. 7, 8409. —  
b) Muschel (wegen der Höhlung so benannt) BĒG. P. 1, 11, 1. 5, 3, 3. 7,  
7. 6, 8, 10. 23. KRAMADIPĪKĀ im ÇKDR. m. BĒG. P. 1, 11, 2. n. ÇKDR.  
WILS. — 3) nom. act. a) m. Erguss; s. असृग्दर. — b) Verzweiflung, Angst,  
= भय, m. AK. 1, 1, 2, 21. H. 301. H. an. m. n. AK. 3, 4, 25, 186. MED. नै-  
व राज्ञा दरः कार्यो ज्ञातु कस्यांचिदापदि । अथ चेदपि दीर्घाः स्यान्नेव वर्तेत  
दीर्घवत् ॥ MBH. 3, 4622. °तिमिर Glt. 10, 2. — 4) indecl. ein wenig  
TRIK. 3, 4, 1. MED. दरविदलित Glt. 1, 35. °मुकुलित 2, 17. SĀH. D. 63, 13.  
°मन्थर Glt. 11, 3. °स्रथ 12, 13. Als adj. in der Bed. wenig: °व्रीडा  
SĀH. 41, 18; vgl. 42, 18, wo st. dessen स्वल्पव्रीडा gesagt wird.

दरकण्टिका (दर + कण्टक) f. N. einer Staude, Asparagus racemosus  
(शतावरी), RĀGĀN. im ÇKDR.

दरणा (von 1. दर) n. das Bersten, Springen, Zerbrechen: कलशं  
ÇĀNĀB. ÇR. 13, 12, 7. KAUC. 36. ADBH. BR. in Ind. St. 1, 39, 3 v. u. त्रिते: